M.A. History
Sem. 3
Session - 2021-23

राजनीतिक चेतना और क्रांति

विचार क्रांति हमारे सोचने के तरीके में एक क्रांति है, जो हमें अपने दिमाग को पुरानी बाधाओं को दूर करने और अपनी क्षमता हासिल करने के लिए प्रशिक्षित करने की अनुमति देती है।

प्रतिरोध सिद्धांत उन शासकों को चेतना देने से इनकार करते हैं जो अनुचित तरीके से कार्य करते हैं, लेकिन वे इस बात से इनकार नहीं करते हैं कि जब प्रजा सरकार की वैध प्रणालियों के रूप में देखी जाती है, उसके अधिकार या भावना के अनुसार कार्य करती है, तो इसका अपने शासकों का पालन करने का दायित्व होता है। इसके विपरीत क्रांतिकारी विचारकों का तर्क है कि प्रजा उन लोगों के अधिकार को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है जिनका शासन करने का दावा एक अन्यायपूर्ण राजनीतिक संस्था से उत्पन्न हुआ है। क्रांतिकारी राजनीतिक विचार का उद्देश्य मौजूदा राजनीतिक संस्थाओं की कमजोरियों की पहचान करना है, और यह दिखाना है कि इन कमजोरियों से केवल एक मौलिक रूप से भिन्न सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करके ही बचा जा सकता है। इन मामलों में प्रतिरोध राज्य के लिए एक चुनौती है। इस मामले में प्रतिरोध के कई सिद्धांतों का संवैधानिक आधार है, इसका मतलब है कि विरोध करने के दावे राज्य की संस्था का हिस्सा है। क्रांतिकारी परिवर्तन की ओर कानूनी प्रकृति, और तथ्य यह है कि क्रांतियों का उद्देश्य, राज्य की संस्था और समुदाय के भीतर राजनीतिक शक्ति के वितरण में मौलिक परिवर्तन

जाना है। इसका मतलब है कि क्रांतिकारी सिद्धांत आमतौर पर एक हिंसक चुनौती की आवश्यकता मानता है मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था और उन लोगों के लिए जो इसके भीतर सत्ता का संचालन करते हैं।

राजनीतिक दायित्व की अवधारणा संबंधी अध्ययन, सम्बद्ध शब्दों — राजनीतिक वैधता और क्रांति के अन्वेषण की ओर आवश्यक रूप से प्रवृत करता है।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept. of. History
P.G.
SEM. 3.
Session - 2021.23
05.02.2024
Class - 1.
S.B. College, Ara
Mob/WP:- 8809947478
email Id:
ukraisasaram@gmail.com